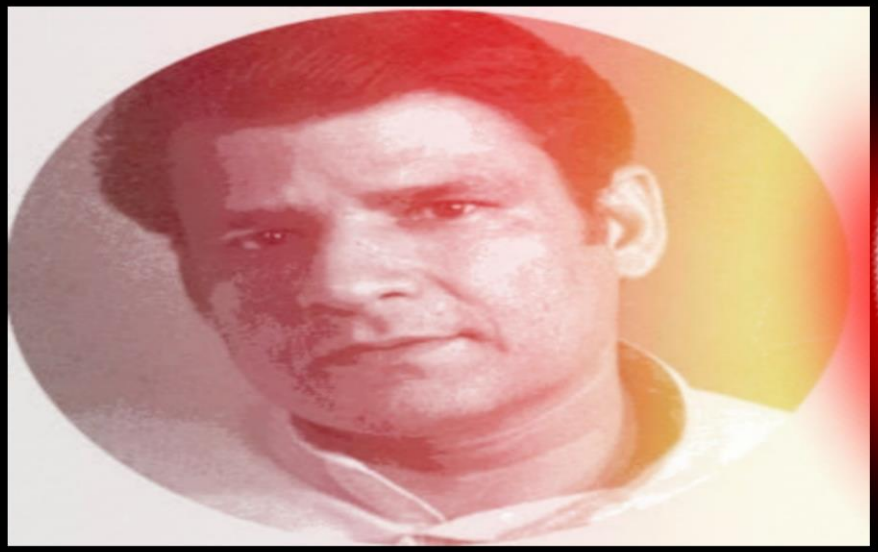

दुष्यंत कुमार की ग़ज़ल

हो गई है पीर परबत सी..

प्रस्तुतकर्ता- डॉ आरिफ महात

दुष्यंत की ग़ज़ल

हो गई है पीर पर्वत-सी पघलनी चाहिए
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी
शर्त थी ले कन क ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी को शश है क ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही
हो कहीं भी आग, ले कन आग जलनी चाहिए।

दुष्यंत की ग़ज़ल

हो गई है पीर पर्वत-सी पघलनी चाहिए
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी
शर्त थी ले कन क ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

दुष्यंत की ग़ज़ल

सर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी को शश है क ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही
हो कहीं भी आग, ले कन आग जलनी चाहिए।